यज्ञ थैरेपी संसार की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्दति

सृष्टि की सम्पूर्ण चेतन योनियों में मानव श्रेष्ठतम है। इसको जो शारीरिक विलक्षता प्राप्त हुई है उसके कल्याण के लिये संसार को वेदों की ओर लौटना होगा। १९वीं शताब्दी के क्रांतिदूत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का उद्घोष था 'वेदों की ओर लौटो' क्योंकि वेदों में मानव कल्याण के सब साधन समाहित हैं। वेद हमें केवल पश्येम शरदः शतम जीवेम शरदः शतम का निर्देश ही नहीं देते अपितु शतवर्ष और उससे भी अधिक स्वस्थ जीवन का साधन भी बताते हैं। मानव जीवन की पहली और अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यक्ता शरीर को स्वस्थ रखने की है। इसके लिये अनेक उपचार पद्दतियां विकसित हुईं यथा आयुर्वेद, एलोपैथ, होम्योपैथ, यूनानी आदि, किन्तु वेद के अनुसार जब ये सब पद्दतियाँ शरीर को रोगमुक्त करने में असमर्थ हो जाती हैं तो यज्ञ थैरेपी ही आशा की एक किरण सिद्द होती है।

अथर्ववेद मण्डल ३ सूक्त ११ मंत्र दो के अनुसार किसी की आयु क्षीण हो चुकी है, जीवन से निराश हो चुका है, मृत्यु के बिल्कुल समीप पहुंच चुका है तो भी हवि चिकित्सा उसे मृत्यु की गोद से भी लौटा ला सकती है। अतः यज्ञ थैरेपी संसार की अद्भुत चिकित्सा पद्दति है जो मनुष्य को मृत्यु के मुख से भी छीन कर उसे स्वस्थ बनाने की क्षमता रखती है। इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि अतीत में हमारे पूर्वज इसे जीवन दायिनी चिकित्सा मानकर उसका प्रयोग करते थे। महाराजा आदित्यसेन की राजमाता जब किसी प्रकार स्वस्थ न हो सकीं तो अन्त में आचार्य चित्रक के कृतत्व में आयोजित यज्ञ चिकित्सा से ही उन्हें स्वास्थ्य लाभ हुआ था। वेदमंत्रों से उनके विशेष उच्चारण से ऐसी लहर उत्पन्न कर देना जिससे रोग का शमन हो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कोई समय रहा होगा जब वेद पाठी इस विधि को जानते होंगे।

हम अपने अतीत की ओर दृष्टिपात करते हैं तो वैभवशाली समाज की संरचना पाते हैं जहां सब स्वस्थ रहते थे कोई रोगी नहीं होता था। रामराज्य का ऐसा वर्णन आता है। उसका प्रमुख कारण यही था कि उस समय कोई घर ऐसा नहीं होता था जहां प्रतिदिन यज्ञ न होता हो। ऐसी ही घोषणा कैकय देश के राष्ट्रपति अश्वपति ने की थी। वस्तुतः हमारे पूर्वजों ने यज्ञ को मात्र कर्मकाण्ड या पूजा न समझ कर उसे जीवन से जोड़ा था।

यज्ञीय हवि द्वारा रोगी के अन्दर प्राण फूंका जाता है उसे रोगों से मुक्त किये जाने के लिये यज्ञ में औषध युक्त सामग्री और गौघृत का प्रयोग किया जाता है। इन आहुतियों से रोग निवारक गंध वायुमण्डल में फैल जाती है। उस वायु को रोगी श्वास द्वारा फेफड़ों में भरते हैं। उस वायु का रक्त से सीधा सम्पर्क हो जाता है। रोग निवारक परमाणुओं को वह वायु रक्त में पहुंचा देती है इससे वहां विद्यमान रोग कृमि मर जाते हैं। रक्त के अनेक दोष वायु में आ जाते हैं। प्राणायाम द्वारा उस दोषयुक्त वायु को बाहर निकालते हैं। इस प्रकार शरीर से दोष बाहर निकल जाते हैं। इस प्रकार बार बार श्वास लेने से यज्ञ द्वारा संस्कृत वायु प्राप्त होती है और शनैः शनैः रोगी स्वस्थ हो जाता है।

औषधि खाने से वह शरीर के अन्दर प्रविष्ट होकर रोग को नष्ट करती है किन्तु यज्ञ के माध्यम से घृत के परमाणुओं में प्रयुक्त होकर सूक्ष्म गैस बनकर श्वास के साथ शरीर में प्रविष्ट होकर इन्जेकशन की भांति तत्काल सीधी रक्त में मिलकर रोग को नष्ट करती है। रोगी को कोई पौष्टिक पदार्थ खिलाने में हानि का भय रहता है किन्तु उस पौष्टिक पदार्थ को होम कर उसका सार तत्व रोगी को श्वास द्वारा खिलाया जा सकता है। संसार की कोई पैथी इस प्रकार का कार्य नहीं कर सकती इसलिये यज्ञ द्वारा चिकित्सा विधि सर्वोत्तम है।

अथर्ववेद में रोगोत्पादक कृमियों का वर्णन आता है जो श्वास, वायु, भोजन, जल द्वारा अथवा उनके द्वारा काटकर शरीर को रोगी बनाते हैं। यज्ञ द्वारा कृमि विनाशक औषधियों की आहुति देकर रोगों को अच्छी प्रकार दूर

किया जा सकता है जिस प्रकार नदी पानी के झागों को बहाकर उसे शुद्ध कर देती है।

स्वस्थ रहने के लिये पर्यावरण का शुद्ध होना परम आवश्यक है। पर्यावरण शुद्धि का यज्ञ सर्वोत्तम साधन है। यज्ञ धूम से मकानों के अन्धकार पूर्ण कोनों में सन्दूक के पीछे, पीपे आदि सामानों के पीछे, दीवालों की दरारों में तथा गुप्त स्थानों में जो रोग कृमि बैठे रहते हैं वे सब विनष्ट हो जाते हैं। सूक्ष्म परमाणुओं में विभक्त हो जाने से औषधियों का गुण बढ़ जाता है। इसी लिये धातुओं को सूक्ष्म कर भस्म बनाई जाती है, होम्योपैथी की विचूर्णीकरण और आलोडन क्रिया द्वारा सूक्ष्म शक्ति प्रदान की जाती है। यह सब एक प्रकार से यज्ञ ही है। यदि वस्तु में अपना कोई गुण है तो अग्नि उसे बढ़ा देती है और यदि अपना गुण नहीं है तो अशुद्धि को दूर कर वातावरण को शुद्ध पवित्र बना देती है। अग्निहोत्र से ही शुद्ध वायु अन्दर प्रविष्ट होती है और दूषित वायु बाहर निकलती है।

यज्ञ के द्वारा उत्पन्न सुगन्धित वातावरण में प्राणायाम करने का विशेष लाभ होता है। फेफड़ों में लगभग २२० वर्ग इंच वायु रहती है। २० से ३० वर्ग इंच वायु ~~प्राणायाम से~~ प्रश्वास द्वारा बाहर जाती है। २०० वर्ग इंच वायु फेफड़ों में ही रह जाती है। प्राणायाम से गहरे श्वास से १२० वर्ग इंच की वायु बाहर निकल जाती है। इस रिक्तता को भौतिक नियमानुसार वायु अपने वेग से भरती है। अग्निहोत्र से उत्पन्न औषधियुक्त एवं शुद्ध वायु वहाँ उपलब्ध होने से रोगी को मिल जाती है। इस प्रकार यज्ञ द्वारा सामग्री, घृत का सूक्ष्म तत्व फेफड़ों में पहुंच कर उन्हें शुद्ध बना देता है जिससे शरीर को पर्याप्त आक्सीजन मिलता है और शरीर के मृत शैल्स भी पुनर्जीवित हो जाते हैं।

इस प्रकार रोगी परमात्मा के प्रदान किये यज्ञ की शरण में पहुंच कर पूर्ण स्वस्थ हो जाता है। यज्ञ स्वस्थ व्यक्ति के लिये भी लाभ दायक है वह उसकी रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाता है।